class 9th
sub hindi
date 29/4/20
learn and write in fair notebook

प्र०८ 'ज्ञानी' से कवयित्री का क्या अभिप्राय है?

उ० 'ज्ञानी' का अर्थ है - सत्य-असत्य और धर्म-अधर्म में से सत्य और धर्म की पहचान करने वाला व्यक्ति। ज्ञानी व्यक्ति सत्य की परख करता है और ईश्वर-अल्लाह में भेद नहीं करता है, उसके लिए ईश्वर सर्वव्यापी है। ज्ञानी व्यक्ति सांसारिक मोह-माया से परे और सच्ची भक्ति का साधक होता है।

अन्य प्रश्न

प्र०१ 'खाने' और 'परमात्मा' के बीच क्या संबंध है?

उ० मनुष्य संसार में भोग कर-करके केवल अपने नश्वर शरीर और इंद्रियों का भरण-पोषण करता है। यदि मनुष्य बिना खाए रहे तो वह स्वयं को महात्मा मानने लगता है और अहंकार के कारण परमात्मा प्राप्ति के मार्ग से भटक जाता है। दोनों ही स्थितियाँ मनुष्य को ईश्वर भक्ति से दूर करने वाली होती है।

प्र०२ वाख के अनुसार, मनुष्य समभावी (कब) कब बनेगा?

उ० वाख के अनुसार मनुष्य जाति एवं धर्म-संबंधी संकीर्ण भावनाओं के बंधन तोड़ने पर ही मनुष्य समभावी बनेगा। समभावी उसे कहते है, जो भोग एवं त्याग के बीच संतुलन रखते है हुए मध्यम मार्ग अपनाते है। इसके लिए आवश्यक है कि मनुष्य अपनी पूर्व धारणाओं से मुक्त होकर संकीर्णताओं को त्यागे।

प्र०३ 'वाख' कविता के माध्यम से कवयित्री मनुष्य को क्या प्रेरणा देना चाहती है?

उ० 'वाख' कविता के माध्यम से कवयित्री मनुष्य को संकीर्ण संप्रदाय की भावना से ऊपर उठकर ईश्वर भक्ति करने की प्रेरणा देती है। कवयित्री सांसारिक कार्यों को त्याग करने की बात नहीं करती कहती, बल्कि संसार एवं ईश्वर, भोग एवं त्याग में संतुलन बनाने का समर्थन करती है। इसलिए वह मनुष्य को समभावी होने पर ज़ोर देती है।